सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(विद्रोही पक्ष, प्रगतिशीलता, भाषा, काव्य-चेतना)

बीए द्वितीय एवं तृतीय वर्ष

हिन्दी साहित्य

हेतु

अत्यन्त महत्वपूर्ण

० प्रस्तुतकर्ता ०

डॉ. जगदीश शरण

असि. प्रोफ़ेसर हिन्दी

राजकीय महाविधालय भोजपुर

(मुरादाबाद)

स्वयं निर्मित

Scanned with CamScanner

निराला : संक्षिप्त परिचय

: जन्म – माघ शुक्ल 11, दिन मंगलवार, संवत 1955 तदनुसार 29 फरवरी, सन 1899 को बंगाल के मेदिनीपुर जिले की महिषादल रियासत में पिता रामसहाय तिवारी के घर। बचपन का नाम – सूर्यकुमार। माता का नाम – रुक्मणि देवी। पत्नी का नाम – मनोहरा देवी। दो सन्तानों को जन्म दिया – रामकृष्ण और सरोज। सरोज के अकाल निधन पर 'सरोज-स्मृति' नामक प्रसिद्ध शोक-गीत की रचना की। मृत्यु 15 अक्टूबर, सन 1961 को जलोदर और हर्निया की बीमारी के कारण।

निराला ही अकेले ऐसे कवि थे जिन्हें हिंदी-जगत में सबसे अधिक साहित्यिकों का कोप-भाजन बनना पड़ा था। उनकी सर्वप्रथम रचना 'जुही की कली' थी जिसे महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती में छापने से ~~इनकार~~ इनकार कर दिया था। बाद में यह रचना सन 1921 में प्रकाशित हुई।

~~[illegible]~~ उस युग के प्रसिद्ध पत्र 'मतवाला' जिसके प्रधान सम्पादक महादेव प्रसाद बाबू थे, के समनाम पर ही निराला का उपनाम 'निराला' पड़ा। निराला ने लगभग 44 ग्रन्थों की रचना है जिनमें बेला, नये पत्ते, आराधना, तुलसीदास, परिमल, कुकुरमुत्ता, अनामिका, चतुरी चमार, चोटी की पकड़, अलका, अप्सरा, प्रभावती, ~~[illegible]~~ गेंदा, चाबुक, प्रबन्ध-प्रतिमा आदि प्रमुख हैं। इनमें 'कुकुरमुत्ता' सर्वप्रथम प्रगतिवादी और प्रतीक काव्य है जिसमें मार्क्स का गहरा प्रभाव है। 'राम की शक्ति-पूजा' गरिमा और प्रभाव की दृष्टि से हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ लम्बी कविता है। अपनी पुत्री के अकाल निधन पर लिखा 'सरोज स्मृति' नामक ~~[illegible]~~ शोक-गीत हिन्दी-जगत का सर्वाधिक प्रसिद्ध शोक-गीत माना जाता है। निराला ने अपने युग में मुक्त छन्द का ऐतिहासिक प्रवर्तन किया था जिन्हें 'रबर छन्द' या 'केंचुआ छन्द' कहकर उनका उपहास किया जाता था किन्तु आज हिन्दी में यही छन्द सर्वाधिक प्रचलित है।

Scanned with CamScanner

राग-विराग : 'राग-विराग' निराला की श्रेष्ठ कविताओं का संकलन है जिसे डॉ० रामविलास शर्मा ने सम्पादित किया है। इस संकलन में परिमल, गीतिका, अनामिका, बेला, अणिमा, नये पत्ते, गीत-गुंज, अर्चना, आराधना तथा सान्ध्य काकली की श्रेष्ठ रचनाएँ संकलित हैं। कुकुरमुत्ता का पूर्वार्द्ध भाग भी इस संकलन में संकलित है। इस संकलन का प्रकाशन लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ने किया है।

विद्रोही कवि निराला : निराला मूलत: विद्रोही और क्रान्तिकारी साहित्यकार हैं। डॉ० धनञ्जय वर्मा ने निराला के विद्रोह को उत्पन्न करने के मूल कारण के विषय में लिखा है कि सामान्य परिवार में उत्पन्न होने और कान्यकुब्जों में निम्न गोत्र से सम्बद्ध होने के कारण उस क्षेत्र में उनके घर का सम्मान नहीं था, बल्कि उच्च गोत्रीय कान्यकुब्ज उन्हें 'धाकर' कहकर पुकारते थे, तिरस्कृत और उपहसित करते थे। इससे उनके मन में गहरा असन्तोष उत्पन्न हो गया और उनका मन विद्रोह कर उठा। स्वयं निराला ने लिखा है कि – मैं बचपन से आजादी पसन्द था। दबाव नहीं सह सकता था। खासतौर से वह दबाव जिसकी वजह न मिलती हो (कुल्लीभाट, पृ० 36)। इससे स्पष्ट है कि निराला पर पड़ने वाला तर्कहीन दबाव उनमें विद्रोह की भावना उत्पन्न करता था। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि उनकी समग्र जीवन-तपस्या में कोई भी क्षण ऐसा नहीं आया जब परिस्थितियाँ उनके अनुकूल हुई हों और जब उन्होंने प्रतिकूल क्षण के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया हो।

निराला के विद्रोह का मूल कारण उनके महत्वबोध को ठेस पहुँचना था। उनकी पारिवारिक दुर्घटनाएँ, अर्थ-कष्ट, राजनेताओं और साहित्यिकों द्वारा उनकी उपेक्षा एवं तत्कालीन रूढ़ि और कुरीतियाँ उस विद्रोह को तीव्रतर करने में सहायक सिद्ध हुईं। डॉ० रामविलास शर्मा ने लिखा है कि निराला जिस दुनिया में रहते थे, उसमें हर तरह की विषमता चरम सीमा पर थी। राजमहल, जिनमें बंगाल के लाट आते थे, सिपाहियों

फूँस-छाए कच्ची मिट्टी के घर जानवरों के रहने लायक भी नहीं; वारांगनाएँ, भोग-विलास के अकूत साधन, और उधार त्यागी, बाल-ब्रह्मचारी, दक्षिणा रायण के सेवक संन्यासी, विश्व-वन्दित, नोबेल पुरस्कार-विजेता रवीन्द्रनाथ की अतीव ख्याति, और एक पतली-सी 'अनामिका' लिये, विरोध से पीड़ित हर साधन से वंचित निराला, ज्ञान-विज्ञान में बड़ा नाम करने वाले विद्यार्थियों के प्रोफेसर, एण्ट्रेन्स फेल, अव्यवस्थित, अधूरी शिक्षा पाया हुआ, विश्वविद्यालयों के फाटक के बाहर फटेहाल कवि। यह वैषम्य उनके अन्तर्द्वन्द्व को और तीव्र कर देता।

<u>प्रगतिशीलता</u>: सन् 1938 के बाद निराला की चेतना में एक मोड़ आया और यह नवीन मोड़ था—प्रगतिवादी चेतना का। यद्यपि प्रगतिवादी तत्व उनकी 'वह तोड़ती पत्थर' (सन् 1935) जैसी पूर्ववर्ती रचनाओं में भी प्राप्त होते हैं तथापि विशुद्ध और पूर्ण वैज्ञ रूप में वे उनकी परवर्ती रचनाओं (कुकुरमुत्ता, बेला) में ही प्रकट हुए हैं।

रूढ़ियों का विरोध और मूलता का समर्थन, शोषकों के प्रति आक्रोश और सर्वहारा से सहानुभूति, ध्वंसात्मक मार्ग का अनुसरण करना आदि प्रगतिवाद की प्रमुख मान्यताएँ हैं। इन सबका स्पष्ट प्रयोग निराला की प्रसिद्ध रचना 'कुकुरमुत्ता' में हुआ है किन्तु यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि निराला की क्रान्ति ध्वंसात्मक के बाद सर्जनात्मक पक्ष स्वीकार करती है। 'कुकुरमुत्ता' में निराला यह नहीं चाहते कि बाग से गुलाब पूर्णरूपेण उजाड़ दिए जाएँ। वे नवाब का हृदय-परिवर्तन कर कुकुरमुत्ता के प्रति लगाव पैदा करना चाहते हैं। 'कुकुरमुत्ता' के सन्दर्भ में निराला की प्रगतिशीलता पर प्रो० विश्वम्भर मानव की टिप्पणी भी द्रष्टव्य है। उनका कहना है कि निराला का दृष्टिकोण

प्रगतिशील अवश्य है, पर वे मार्क्सवादी नहीं है। जनसाधारण का पक्ष उन्होंने कभी कहीं मानवतावाद के आधार पर लिया है। कुकुरमुत्ता गन्दगी में उगता है। इस शब्द का अर्थ ही है — ऐसे स्थान पर उगना जहाँ कुत्ते मूतें। कुकुरमुत्ता बिना कुछ कहे खरी-खोटी सुनाता है और गुलाब ने यहाँ से वहाँ तक एक भी व्यंग्य का उत्तर नहीं दिया है। वह उसे 'जनखा' और 'हरामी' तक कहता है, पर गुलाब उत्तेजित न होकर शान्त है। इससे इतनी ध्वनि तो निकलती ही है कि जहाँ गुलाब संस्कृत स्वभाव का है, वहाँ कुकुरमुत्ता अशिष्ट और ~~असभ्य~~ असभ्य कम्यूनिस्ट विचारधारा का समर्थक है।

छायावादी कवियों में निराला ही एकमात्र ऐसे कवि हैं जिन्होंने प्रगतिवादी काव्य के तत्वों को पूरी सच्चाई और ईमानदारी से आत्मसात करते हुए ऐसी कविताओं की रचना की जो अपनी अनुभूति की ईमानदारी और यथार्थ की सच्चाई के कारण प्रगतिवादी कविताओं की अभिव्यक्ति के समक्ष कमतर करके नहीं आँकी जा सकतीं। 'नए पत्ते' और 'कुकुरमुत्ता' काव्यसंग्रह वस्तुतः निराला की प्रगतिवादी चेतना का शंखनाद हैं।

'बादल राग' कविता में वर्ग-संघर्ष की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है। निराला का विश्वास था कि वर्ग-संघर्ष से ही क्रान्ति का जन्म होगा जो शोषक और शोषित के भेदभाव को समाप्त करेगा। इसलिए वह 'बादल राग' की अनेक कविताओं में क्रान्ति का आह्वान करते हैं। इसके अतिरिक्त 'वह तोड़ती पत्थर', 'भिक्षुक' जैसी कविताओं में निराला ने शोषित वर्ग की विवशता का करुण चित्रण किया है। निराला की व्यंग्य कविताओं ~~में~~ से उनकी प्रगतिवादी चेतना को मुखर और एक सीमा तक आक्रामक अभिव्यक्ति दी है। वास्तव में प्रगतिवादी चेतना के कारण ही निराला को विद्रोही कवि की पहचान मिली है जो उनके छायावादी व्यक्तित्व से बिलकुल भिन्न है।

यथार्थता : 'यथार्थता' का आशय है – वास्तविकता। जीवन और जगत में जो कुछ हो रहा है या युगों से जो होता आया है, साहित्य में उसी की अभिव्यक्ति को यथार्थवाद कहा जाता है। यथार्थवाद का प्रयोग आदर्शवाद और स्वच्छन्दतावाद के विरोध में उन साहित्यिक कृतियों के लिए किया जाता है जिनमें वास्तविक जीवन का वास्तविक चित्रण किया जाता है और जिनकी विषय-वस्तु वास्तविक संसार से ग्रहण की जाती है। निराला की लगभग सभी रचनाएँ यथार्थ के धरातल पर लिखी गई हैं।

अनामिका, परिमल, गीतिका, अणिमा, कुकुरमुत्ता, आराधना, बेला, नये पत्ते आदि काव्य-ग्रन्थों की अनेक कविताओं में निराला ने अपनी यथार्थवादी दृष्टि को अपनाया है। अप्सरा, अलका, निरुपमा, चोटी की पकड़ नामक उपन्यास और उनकी निराला की समस्त कहानियाँ यथार्थ की रचनाओं के ज्वलंत उदाहरण हैं।

विधवा, भिक्षुक, दीन, आदि (परिमल), दान, तोड़ती पत्थर, सरोज-स्मृति, वन-बेला, मित्र के प्रति, खण्डहर के प्रति, दिल्ली (अनामिका), आँख के आँसू, कवेश रूके, भीख माँगता (बेला) रानी और कानी, दगा की, डिप्टी साहब आये, झींगुर डटकर बोला (नये पत्ते), मानव जहाँ बैल-घोड़ा है, खेत जोत कर, भरी तन की गरज, आँख अश्रु रेंग (आराधना) आदि रचनाओं में निराला ने अपनी यथार्थ दृष्टि को अपनाया है।

भाषा : छायावाद-युग में प्राय: सभी कवियों ने एक नयी, चित्रात्मक, लाक्षणिक, आभिव्यंजक तथा प्रतीकात्मक भाषा के द्वारा अपने नये अनुभव-सम्वेदन को व्यक्त किया है किन्तु उनमें भी निराला भाषा सम्बन्धी अपने विशिष्ट प्रयोग के लिए अलग ही उल्लेखनीय स्थान के अधिकारी हैं।

आरम्भ में निराला को खड़ीबोली का ज्ञान नहीं था। अपनी पत्नी मनोहरादेवी से उन्होंने खड़ीबोली का ज्ञान प्राप्त किया। निरन्तर अभ्यास के बल पर

उन्हें खड़ीबोली का सम्यक् ज्ञान हो गया। उन्होंने भाषा सम्बन्धी नये-नये प्रयोगों के द्वारा खड़ीबोली का रूप सँवारा और उसे स्वस्थ एवं भव्य रूप प्रदान किया। उन्होंने जहाँ एक ओर संस्कृत के तत्सम शब्दों की सहायता ली, वहीं उन्होंने खड़ीबोली की व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों को देखकर उसके सुधार के नये प्रयास किये।

निराला की कृतियों में अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, आराधना, अर्चना, गीत-गुंज तथा सांध्य-काकली की भाषा संस्कृत की तत्समता लिए हुए है जबकि अणिमा, बेला, नये पत्ते, कुकुरमुत्ता की भाषा पर उर्दू-फारसी का प्रभाव देखने को मिलता है। वैसे उर्दू शब्दों तथा ग्रामीण शब्दों का प्रयोग अनामिका की 'खुला आसमान' जैसी रचना में भी हुआ है। इस कविता की यही विशेषता है कि ग्रामीण वातावरण को ग्रामीण भाषा में ही व्यक्त किया गया है। 'बेला' और 'नये पत्ते' की भाषा की, जो उर्दू भाषा से प्रभावित है, नींव इसी कविता में देखी जा सकती है। 'बेला' में हिन्दी और उर्दू के बीच की खाई को पाटने का प्रयास किया गया है। 'कुकुरमुत्ता' में निराला इलियट की मिश्र सन्दर्भ-गर्भित शैली से प्रभावित हुए हैं। अनामिका, परिमल का कवि प्रकृति-प्रेमी तथा आत्मचिन्तक है। उसकी काव्य-भाषा भी प्रकृति के समान ही कोमल तथा रंगीन है। 'बेला' तथा 'नये पत्ते' काव्यकृतियों में निराला प्रगतिवादी हो गए हैं। अपने इस ऐतिहासिक मोड़ पर निराला की काव्यभाषा जन-सामान्य का चित्रण करने लगी और सामान्य प्रयोग की भाषा के समीप जा पहुँची। गद्य-कृतियों में निराला की भाषा प्रसंग और पात्र के अनुरूप कलात्मक अथवा व्यावहारिक रूप ग्रहण करती है।

निराला के विचार से काव्य की भाषा शुद्ध, सरल तथा सरस होनी चाहिए। उसमें रस तथा अलंकारों का सुन्दर निर्वाह होना चाहिए। उसका ~~रूप~~ स्वरूप परिमार्जित होना चाहिए तथा उसे जन-मानस की भाषा होना चाहिए। निःसन्देह, निराला-काव्य में भाषा की इन्हीं विशेषताओं का पूर्णतः निर्वाह हुआ है।

Scanned with CamScanner

शोकगीत : 'सरोज-स्मृति' (सन् 1935) एक लम्बी कविता है जिसमें निराला ने अपनी इकलौती पुत्री सरोज के आकस्मिक निधन पर अपने शोक-संवृद्ध हृदय के उद्गार व्यक्त किए हैं। हिन्दी कविता में इस रचना को अपने ढंग का पहला शोकगीत माना गया है। 'सरोज-स्मृति' में केवल बेटी के प्रति पिता के उद्गार ही नहीं वरन् अपने समय के समाज पर निराला की विषादपूर्ण टिप्पणियाँ भी हैं। कविता का मूलभाव करुण होते हुए भी स्थान-स्थान पर निराला के विद्रोही और स्वाभिमानी व्यक्तित्व के अनुरूप समाज और साहित्य पर व्यंग्योक्तियाँ भी हैं जिनमें निराला के जीवन का विषाद, विद्रोह और हताशा-निराशा की भी झलक मिल जाती है।

'सरोज-स्मृति' की कतिपय दुर्लभ विशेषताएँ हैं, जैसे— वधू के रूप में पुत्री के सौन्दर्य का वर्णन या सरोज के यौवन-सौन्दर्य का वर्णन निराला ने जिस मर्मता और संयमित दृष्टि से किया है, वह मुक्तभोगी निराला की ही सामर्थ्य में था। सरोज के यौवनागम के सौन्दर्य की मालकोश राग से उपमा देकर सरोज के तारुण्य और लावण्य को अपूर्व गरिमा दी है।

निराला के विद्रोही स्वभाव की अभिव्यक्ति कई स्थलों पर हुई है जैसे— पत्नी के निधन के बाद पुनर्विवाह न करना, पुत्री के विवाह में जातिगत रूढ़ियों के प्रति धिक्कार तथा बारात आदि वैवाहिक प्रथाओं का त्याग करना।

'सरोज-स्मृति' की तीसरी प्रमुख विशेषता निराला की वैयक्तिक करुणा और वेदना है। संघर्षों से जीवन-भर जूझने वाले कवि की व्यथा-वेदना घनीभूत होकर इन शब्दों में बह चली है—

दुःख ही जीवन की कथा रही।
क्या कहूँ आज जो नहीं कही!

Scanned with CamScanner

काव्य-चेतना : निराला के काव्य का केन्द्रीय स्वर प्रगतिमुखी, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक है। मानवीय समता में विश्वास और मानवीय उत्कर्ष की आकांक्षा उनके ~~साहित्य~~ काव्य का स्थायी भाव है। उनका समस्त जीवन तथा व्यक्तित्व सांस्कृतिक चेतना से अनुप्रेरित था। समाज में 'जो हो रहा है' की कुरूपता को वही आँक सकता है जो 'जो होना चाहिए अथवा जैसा होना चाहिए' की चेतना से युक्त हो। निराला में इस चेतना का स्फुरण उनके आरम्भिक जीवन से ही दिखाई देने लगता है और निरन्तर अध्ययन और चिन्तन के प्रभाव से वह चेतना शीघ्र ही विकसित होकर ~~विश्वजनीन~~ विश्वजनीन मानवीय-संस्कृति की परिपक्व चेतना में ढल गयी और निराला-काव्य का प्राण बनकर अभिव्यक्ति पाने लगी।

निराला ने अपने काव्य में परिवार, समाज, राष्ट्र और ~~सम्बन्धी~~ सभी पक्षों पर अपने विचार व्यक्त कर राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्ति प्रदान की है। काव्य-स्वरूप ~~साहित्य~~ में निराला ने सभी साहित्यकारों से अलग अपनी विशेष पहचान बनायी है। उनके काव्य का उद्देश्य मात्र कलात्मकता तक ही सीमित न था। अपने युग के जन-जीवन की सामर्थ्य और सीमा को अच्छी तरह जान कर उसे नवीनतम सांस्कृतिक उत्थान की ओर अग्रसर करना ही उनके जीवन और साहित्यिक चेतना का मुख्य आग्रह था। निराला ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवीन विकास की आवश्यकता पर बल दिया है। उनकी सांस्कृतिक क्रान्ति नवीनता का आग्रह करती है। उन्होंने व्यक्ति, समाज, साहित्य, कला, धर्म, शिक्षा, राजनीति आदि सभी की विकृतियों पर व्यंग्य किया है और जीवन में पड़े सुप्त शक्तियों में व्यापक परिवर्तन के लिए चेतना जगाने का अथक प्रयास किया। भारतीय संस्कृति के स्वस्थ और समग्र विकास में सबसे बड़ी ~~बाधक~~ बाधा निराला हिन्दु और मुसलमानों के सदियों से चले आ रहे पारम्परिक वैमनस्य को मानते थे। उनका यह विश्वास था कि समाज में ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, गरीब-अमीर की खाई को पाटकर एवं प्रचलित सामाजिक अंधविश्वासों तथा रूढ़ियों से मुक्त होकर व्यापक मानवतावाद की भूमि पर हिन्दु-मुस्लिमों को राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय के सूत्र में बांधा जा सकता है। यही उनकी काव्य-चेतना का मुख्य स्वर था।

Scanned with CamScanner